सोलह

यीशु की चंगाई की सेवकाई

The Healing Ministry of Jesus

प्राय: ऐसा सोचा जाता है कि चूंकि यीशु परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र था, इसी कारण वह अपनी इच्छानुसार चंगाई या चमत्कार के कार्य को कर सका। लेकिन पवित्रशास्त्रीय पदों को निकटता से देखने पर हम पाते हैं कि ईश्वरीय होने पर भी यीशु अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई की समय सीमा में था। एक बार उसने कहा था, ''पुत्र अपने आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है'' (यूहन्ना 5:19)। यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि यीशु सीमित होने के साथ-साथ अपने पिता पर निर्भर था।

पौलुस के अनुसार, यीशु ने मानव बनने पर स्वयं को कुछ चीज़ों से ''खाली किया'' जो उसके पास पहले परमेश्वर के रूप में थीं:

> जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो, जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन *अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया,* और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की सामनता में हो गया (फिलि. 2:5-7, पर बल दिया गया है)।

यीशु ने ''अपने आपको'' किससे ''शून्य'' किया था? यह उसकी ईश्वरीयता नहीं थी। यह उसकी पवित्रता नहीं थी। यह उसका प्रेम नहीं था। यह अवश्य ही उसकी अलौकिक सामर्थ थी। निस्संदेह, अब वह सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान नहीं रह गया था। यीशु एक व्यक्ति बन गया था। अपनी सेवकाई में उसने पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त एक व्यक्ति के रूप में कार्य किया। चारों सुसमाचारों को देखने पर यह और भी स्पष्ट हो जाता है।

उदाहरण के लिए, हमें पूछना चाहिए, *यदि यीशु परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र था,*

तो तीस वर्ष की आयु में जब उसने अपनी सेवकाई का आरम्भ किया तब उसके लिए पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेना आवश्यक क्यों था? परमेश्वर को परमेश्वर से बपतिस्मा लिये जाने की आवश्यकता क्यों हुई?

स्पष्ट है कि सेवकाई के लिए अभिषिक्त होने को यीशु को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता हुई। इसी कारण उसके बपतिस्मा के तत्काल बाद ही हम उसे इन शब्दों का प्रचार करते हुए पढ़ते हैं : प्रभु का आत्मा मुझ पर है, *इसलिए कि उसने मुझे* प्रचार करने...छुड़ाने को *अभिषिक्त* किया है (लूका 4:8, पर बल दिया गया है)।

इसी कारण पतरस ने भी प्रचार किया, ''*परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया:* कि वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था, (प्रेरित. 10:38, पर बल दिया गया है)।

इसी कारण यीशु ने तीस वर्ष की आयु में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेने तक कोई चमत्कार नहीं किया था। क्या वह पच्चीस वर्ष की आयु में परमेश्वर का पुत्र था? निश्चय ही। इसी कारण वह तीस वर्ष की आयु तक कोई चमत्कार नहीं कर पाया था। इसका सरल सा कारण है, चूंकि यीशु ने स्वयं को परमेश्वर प्रदत्त अलौकिक सामर्थ से खाली किया था और उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरे जाने तक प्रतीक्षा करनी थी।

अत्यधिक प्रमाण कि यीशु ने पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त व्यक्ति के रूप में सेवकाई की थी

More Proof that Jesus Ministered as a Man Anointed by the Spirit

सुसमाचार को पढ़ने पर हम ध्यान देते हैं कि कुछ ऐसे समय होते थे जब यीशु अलौकिक ज्ञान से भरा होता था और कई बार नहीं। यीशु ने प्राय: जानकारी प्राप्त करने के संबन्ध में प्रश्न पूछे।

उदाहरण के लिये, उसने सामरिया के कुंए पर स्त्री से कहा कि उसके पांच पति रह चुके हैं और इस समय वह जिस व्यक्ति के साथ रह रही है उससे भी उसका विवाह नहीं हुआ है (देखें यूहन्ना 4:17-18)। यीशु ने यह कैसे जाना? क्या इसका कारण उसका परमेश्वर होना था, क्योंकि परमेश्वर सब कुछ जानता था? नहीं, यदि ऐसा होता तो यीशु अपनी इस योग्यता को बार-बार दिखाता। यद्यपि वह परमेश्वर था और परमेश्वर सब कुछ जानता है, यीशु ने स्वयं को अपनी सर्वज्ञता से खाली कर दिया था, जब वह एक मनुष्य बना था। यीशु कुएं वाली स्त्री की वैवाहिक दशा

को जानता था क्योंकि पवित्र आत्मा ने उस समय उसे ''ज्ञान का वचन'' दिया था (1 कुरि. 12:8), जो वर्तमान और भूतकाल को जानने की अलौकिक योग्यता है (हम अगले अध्याय में आत्मा के वरदानों के बारे में विस्तार से पढ़ेंगे)।

क्या यीशु सभी समयों में सब कुछ जानता था? नहीं, जिस समय लहू बहने वाली स्त्री ने उसके वस्त्र के सिरे को छुआ था और उसने स्वयं में से चंगाई की सामर्थ के निकलने का अनुभव किया था, उसने पूछा था, ''किसने मेरे वस्त्र को छुआ?'' (मर. 5:30ब)। मरकुस 11:13 में जब यीशु ने दूर से ही एक अंजीर के वृक्ष को देखा था तब वह ''उसके निकट कुछ पाने की आशा में गया था।''

यीशु क्यों नहीं जान पाया कि उसे किसने छुआ था? वह क्यों नहीं जान पाया कि अंजीर के वृक्ष में अंजीर हैं या नहीं? क्योंकि यीशु पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त किये जाने पर आत्मा के दानों के साथ एक अभिषिक्त व्यक्ति के रूप में कार्य कर रहा था। आत्मा के दान आत्मा की इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं (देखें 1 कुरि. 12:11; इब्रा. 2:4)। यदि पवित्र आत्मा यीशु को ''ज्ञान का वचन'' नहीं देता तो यीशु अलौकिक रूप से चीज़ों के बारे में नहीं जान पाता।

यह चीज़ यीशु की चंगाई सेवकाई के साथ भी सत्य थी। पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि यीशु किसी विशिष्ट समय पर सभी को चंगा नहीं कर सका था। उदाहरणस्वरूप, हम मरकुस के सुसमाचार में पढ़ते हैं कि जब यीशु नासरत के अपने गृहनगर में आया, तो जो वह करना चाहता था उसे करने में असमर्थ था।

> वहां से निकलकर वह अपने देश में आया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिये। सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश करने लगा; और बहुत लोग सुनकर चकित हुए और कहने लगे, इस को ये बातें कहां से आ गईं? और वह कौन सा ज्ञान है जो उसको दिया गया है? और कैसे सामर्थ के काम इसके हाथों से प्रगट होते हैं? क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब और योसेस और यहूदा और शमौन का भाई है? इसलिये उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई। यीशु ने उन से कहा कि भविष्यद्वक्ता का अपने देश और अपने कुटुम्ब और अपने घर को छोड़ और कही भी निरादर नहीं होता। और वह वहां *कोई सामर्थ का काम न कर सका* केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रख कर उन्हें चंगा किया। और उसने उनके अविश्वास पर आश्चर्य किया (मर. 6:1-6, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा कि वह वहां कोई चमत्कार *नहीं करता,* बल्कि यह कि वह *नहीं कर सका*। क्यों? क्योंकि नासरत के लोग अविश्वास करने वाले थे। उन्होंने यीशु को परमेश्वर के अभिषिक्त पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं किया था

बल्कि स्थानीय बढ़ई के पुत्र के रूप में; जिस तरह से यीशु ने स्वयं कहा, ''भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने कुटुम्ब और अपने घर को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता'' (मर. 6.4)। जिसके परिणामस्वरूप वह कुछ को ही चंगा कर सका। निश्चय ही अगर कोई ऐसा स्थान था जहां यीशु चमत्कारी कार्य करने के साथ-साथ लोगों को चंगा करना चाहता था तो वह उसका गृहनगर था जहां उसने अपना अधिकांश जीवन बिताया था। बाइबल बताती है, तौभी, वह ऐसा नहीं कर सका था।

लूका की ओर से अधिक अन्तर्दृष्टि
More Insight from Luke

यीशु ने दो भिन्न विधियों द्वारा प्राथमिक रूप से चंगाई दी थी : (1) बीमार लोगों को चंगाई प्राप्त करने हेतु विश्वास करने के लिए परमेश्वर के वचन से सिखाते हुए प्रोत्साहित करना और (2) पवित्र आत्मा की इच्छा से चंगाई के दानों द्वारा स्वयं को व्यक्त करना।

निस्संदेह यीशु के गृहनगर के अधिकांश लोगों को उस पर विश्वास नहीं था। बेशक उन्होंने दूसरे शहरों में उसके द्वारा किये जाने वाले चमत्कारों के बारे में सुना था, तौभी वे उसमें चंगाई पाई जाने वाली सामर्थ पर विश्वास नहीं कर पाए, और परिणामस्वरूप वह उन्हें चंगा नहीं कर सका। इसके अतिरिक्त पवित्र आत्मा ने यीशु को नासरत में चंगाई का कोई दान नहीं दिया था- इसके कारण को कोई नहीं जानता।

लूका मरकुस की अपेक्षा इसका स्पष्ट रूप से विवरण देता है कि यीशु के नासरत जाने पर क्या हुआ था :

> और वह (यीशु) नासरत में आया जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था कि ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।'' तब उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी और बैठ गया : और आराधनालय के सब लोगों की आंख उस पर लगी थी। तब वह उनसे कहने लगा कि ''आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।'' और सब ने उसे सराहा, और जो अनुग्रह की बातें उसके

> मुंह से निकलती थीं, उनसे अचम्भा किया, और कहने लगे, ''क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं?'' (लूका 4:16-22)।

यीशु अपने श्रोताओं को यह विश्वास दिलाना चाहता था कि वह यशायाह की भविष्यवाणी का अभिषिक्त जन था, इस आशा में कि वे उसके अभिषेक के सभी लोभों पर विश्वास करने के साथ–साथ उन्हें प्राप्त भी करेंगे, जिसमें यशायाह के अनुसार अन्धों के दृष्टि पाने के साथ–साथ बंधुआई और अत्याचार से छुटकारा भी शामिल है।[59] लेकिन उन्होंने विश्वास नहीं किया, और वे बेशक उसके बोलने की योग्यता से प्रभावित हुए थे, लेकिन वे यह विश्वास नहीं कर पाए कि यूसुफ का पुत्र कुछ विशिष्ट था। यीशु ने जवाब दिया;

> तुम मुझ पर यह कहावत अवश्य कहोगे, कि ''हे वैद्य, अपने आप को अच्छा कर। जो कुछ हमने सुना है कि कफरनहूम में किया गया है उसे यहां अपने देश में भी कर।'' --मै तुम से सच कहता हूं, कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में मान-सम्मान नहीं पाता (लूका 4:23-24)।

यीशु के गृहनगर के लोग यह देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि जो कुछ उसने कफरनहूम में किया था उसे यहां भी करेगा। उनका रवैया आशावादी नहीं बल्कि निराशावादी था। अपने विश्वास की कमी के कारण उन्होंने उसे किसी भी चमत्कार या बड़ी चंगाई करने से रोक दिया था।

नासरत में यीशु की अन्य सीमा

Jesus' Other Limitation in Nazareth

नासरत की भीड़ से कहे यीशु के बाद के शब्द यह प्रगट करते हैं कि ''आत्मा के दानों'' द्वारा स्वयं को पवित्र आत्मा की इच्छा से प्रगट करने में भी वह सीमित था:

> और मैं तुमसे सच कहता हूं, कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहां तक कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा, तो इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं। पर एलिय्याह उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सैदा के सारपत में एक विधवा के पास। और एलीशा भविष्यद्वक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर नामान सीरिया निवासी को छोड़ उनमें से कोई शुद्ध नहीं किया गया (लूका 4:25-27)।

---

59. इस सब का शारीरिक चंगाई के रूप में उल्लेख किया जा सकता है। बीमारियों पर सताए जाने के रूप में विचार किया जा सकता है, जैसा पवित्रशास्त्र बताता है कि ''परमेश्वर ने-यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा'' (प्रेरित 10:38)।

यीशु का मुख्य संकेत यह था कि एलिय्याह अपनी इच्छानुसार इस्राएल के तीन वर्ष के अकाल में सभी विधवाओं के लिए तेल और आटे की भरपूरी नहीं कर सका (देखें 1 राजा 17:9-16)। यद्यपि उस समय इस्राएल में बहुत सी दुखी विधवाएं थीं, आत्मा ने एलिय्याह को उस विधवा की सहायता करने के लिए चुना था जो इस्राएली भी नहीं थी। इसी तरह से, एलीशा अपनी इच्छा से किसी और कोढ़ी को शुद्ध नहीं कर सका था। इस सच्चाई से यह प्रमाणित हो जाता है कि नामान के शुद्ध होने के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे। यदि उसकी इच्छा पर होता तो वह पूर्तिपूजक नामान को शुद्ध करने से पूर्व इस्राएल के अन्य कोढ़ियों को शुद्ध करता (देखें 2 राजा 5:1-14)।

एलिय्याह और एलीशा दोनों ही भविष्यद्वक्ता थे– पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त किये गए व्यक्ति–जो आत्मा की इच्छानुसार आत्मा के भिन्न वरदानों में प्रयोग किये गए थे। परमेश्वर ने एलिय्याह को अन्य विधवाओं के पास क्यों नहीं भेजा था? मैं नहीं जानता। परमेश्वर ने एलीशा का प्रयोग अन्य कोढ़ियों को चंगा करने के लिये क्यों नहीं किया? मैं नहीं जानता। परमेश्वर के अतिरिक्त और कोई इसे नहीं जानता है।

तौभी, पुराने नियम की ये दोनों जानी पहचानी कहानियां यह प्रमाणित नहीं करतीं कि परमेश्वर की इच्छा में प्रत्येक विधवा की आवश्यकता को पूरा करना और प्रत्येक कोढ़ी को चंगा करना नहीं था। इस्राएल के लोग एलिय्याह के समय में इस अकाल को समाप्त कर सकते थे, यदि वे और उनका दुष्ट राजा (अहाब) पश्चात्ताप करते। अकाल परमेश्वर के न्याय का एक रूप था। इस्राएल के सभी कोढ़ी परमेश्वर द्वारा दी गई वाचा के शब्दों पर विश्वास करते हुए और उसकी आज्ञा का पालन करते हुए चंगे हो सकते थे, जिसमें हम पहले भी देख चुके हैं कि शारीरिक चंगाई भी शामिल है।

यीशु ने नासरत में अपने श्रोताओं पर प्रगट किया कि एलिय्याह और एलीशा के समान वह भी सीमाओं में था। कुछ कारणों से पवित्र आत्मा ने यीशु को नासरत में चंगाई का कोई वरदान नहीं दिया। कारण लोगों के अविश्वास से भी जुड़ा हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप यीशु के द्वारा उसके गृहनगर में कोई चमत्कार नहीं हो पाया था।

यीशु के द्वारा ''चंगाई के वरदान'' पर एक नज़र
A Look at One "Gift of Healing" Through Jesus

यदि हम यीशु द्वारा की गई विविध चंगाईयों के बारे में सुसमाचार वृत्तान्त से पढ़ें, तो हम पाते हैं कि अधिकांश लोग चंगे हो गए थे, ''चंगाई के वरदानों ''द्वारा नहीं बल्कि अपने विश्वास के द्वारा। आइये दोनों के उदाहरणों को देखते हुए उन दो तरह की चंगाईयों के बीच पाई जाने वाली भिन्नता पर विचार करें। सबसे पहले हम बैतसैदा

कुण्ड के पास पड़े व्यक्ति की कहानी पर विचार करेंगे जो अपने विश्वास के द्वारा नहीं बल्कि यीशु के ''चंगाई के वरदान'' द्वारा चंगा हुआ था।

> यरूशलेम में भेड़ फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बतहसदा कहलाता हैं, और उसके पांच ओसारे हैं। इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे। (क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतर कर पानी को हिलाया करते थे : पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता वह चंगा हो जाता था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।) वहां एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था। यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा, ''क्या तू चंगा होना चाहता है?'' उस बीमार ने उसको उत्तर दिया, कि ''हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुंचते पहुंचते दूसरा मुझ से पहले उतर पड़ता है।'' यीशु ने उससे कहा, ''उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।'' वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा (यूहन्ना 5:2-9)।

हम इस व्यक्ति के विश्वास द्वारा नहीं बल्कि चंगाई के वरदान द्वारा चंगा होने के बारे में कैसे जान पाते हैं? इसके कई संकेत हैं।

सर्वप्रथम, ध्यान दें कि यह व्यक्ति यीशु को नहीं खोज रहा था। इसके विपरीत, यीशु ने उसे कुण्ड के निकट पाया था। यदि यह व्यक्ति यीशु को ढूंढ रहा होता तो यह उसके भाग में विश्वास गिना जाता।

दूसरा, यीशु ने उस व्यक्ति से यह नहीं कहा था कि उसके विश्वास ने उसे चंगा किया, जैसा कि उसने अन्य लोगों को चंगाई देने के समय में कहा था।

तीसरा, जब चंगाई प्राप्त करने वाले व्यक्ति से यहूदियों ने प्रश्न किया कि किसने उससे ''उठकर चलने'' को कहा था, उसने कहा कि वह उस व्यक्ति के बारे में नहीं जानता। अत:, यीशु में यह उसका विश्वास नहीं था जिसके कारण उसे चंगाई मिली थी। यह स्पष्ट रूप से आत्मा की ओर से ''चंगाई के वरदान'' द्वारा किसी के चंगा होने का प्रमाण था।

इस पर भी ध्यान दें कि जब कुण्ड के निकट असंख्य बीमार लोग पानी के हिलाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे, यीशु ने केवल एक को ही चंगा कर बाकी को बीमारी की अवस्था में छोड़ दिया था। क्यों? पुन:, मैं नहीं जानता। तथापि, यह घटना यह प्रमाणित नहीं करती कि परमेश्वर की इच्छा में है कि कुछ लोग बीमार रहें। वे सभी बीमार लोग यीशु पर विश्वास रखने के द्वारा चंगे हो सकते थे। वास्तव में, इस व्यक्ति

के अलौकिक रूप में चंगे होने का एक कारण यह भी हो सकता है-उन बीमार व्यक्तियों का ध्यान यीशु की ओर लगाने के लिए जो उनके विश्वास करने पर उन्हें चंगा कर सकता है।

अधिकांश समय ''चंगाई के वरदान'' चिन्ह और चमत्कारों की श्रेणी में आते हैं, अर्थात् चमत्कारों की रचना यीशु की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए की गई थी। इसी कारण फिलिप्पुस के समान नये नियम के प्रचारकों को विविध ''चंगाई के वरदानों'' से सुसज्जित किया गया था, क्योंकि उनके द्वारा किये गए चमत्कारों का प्रयोग उस सुसमाचार की ओर आकर्षित करने के लिए किया गया था जिसका प्रचार वे कर रहे थे (देखें प्रेरित. 8:5-8)।

बीमार मसीहियों को अपने निकट किसी के ''चंगाई के वरदान'' के साथ आने और उन्हें चंगाई देने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि वह व्यक्ति और वरदान कभी न आए। चंगाई यीशु में विश्वास रखने के द्वारा उपलब्ध है, और चाहे हर कोई चंगाई के वरदानों से चंगा न हो, तौभी हर कोई अपने विश्वास से चंगा हो सकता/सकती है। चंगाई के वरदानों को कलीसिया में प्राथमिक रूप से रखा गया था ताकि अविश्वासी चंगे हो सकें और सुसमाचार की ओर भी ध्यान आकर्षित किया जा सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही कभी चंगाई के वरदानों द्वारा चंगे नहीं होंगे। परमेश्वर अपने लोगों से विश्वास द्वारा चंगाई प्राप्त करने की अपेक्षा करता है।

एक व्यक्ति के अपने विश्वास द्वारा चंगा होने का एक उदाहरण

One Example of a Person Healed By His Faith

बरतिमाई नामक एक अंधा व्यक्ति यीशु पर अपने विश्वास के कारण चंगा हुआ था। आइये मरकुस के सुसमाचार में उसकी कहानी को पढ़ते हैं।

> और वे यरीहो में आए, और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था। वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने लगा; कि ''हे दाऊद की सन्तान, यीशु, मुझ पर दया कर।'' बहुतों ने उसे डांटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, कि ''हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।'' तब यीशु ने ठहरकर कहा, ''उसे बुलाओ''; और लोगों ने उस अन्धे को बुलाकर उससे कहा, ''ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है।'' वह अपना कपड़ा फेंककर शीघ्र उठा,

> और यीशु के पास आया। इस पर यीशु ने उससे कहा; ''तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं?'' अन्धे ने उससे कहा, ''हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूं।'' यीशु ने उससे कहा, ''चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है'' और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया (मर. 10:46-52)।

सबसे पहले ध्यान दें कि यीशु ने बरतिमाई को नहीं ढूंढा (यह बेतसैदा कुण्ड के पास के व्यक्ति के साथ जो हुआ था उसके विपरीत था)। वास्तव में, यीशु उसके पास से होकर जा रहा था, और यदि बरतिमाई उसे नहीं पुकारता, तो वह चलना जारी रखता। इसका अर्थ है कि बरतिमाई चंगा न हुआ होता।

अब इस पर विचार करें। क्या होता यदि बरतिमाई वहां बैठा स्वयं से इस तरह कहता, ''यदि यीशु की इच्छा मुझे चंगा करने की है तो वह मेरे पास आकर मुझे चंगा करेगा।'' इस विचारधारा से बरतिमाई कभी चंगा न हुआ होता, जबकि यह कहानी प्रगट करती है कि यह यीशु की इच्छा में था कि वह चंगा हो। बरतिमाई के विश्वास का पहला चिन्ह यह है कि उसने यीशु को पुकारा था।

दूसरा, ध्यान दें कि बरतिमाई उन लोगों के द्वारा निरूत्साहित नहीं हुआ था जो उसे शांत करने का प्रयास कर रहे थे। जब लोगों ने उसे शांत रखने का प्रयास किया तब ''वह और भी पुकारने लगा'' (मर. 10:48)। यह उसके विश्वास को दिखाता है।

ध्यान दें कि बरतिमाई की पहली पुकार का यीशु ने कोई जवाब नहीं दिया था। यह भी संभव है कि उसने बरतिमाई की पहली पुकार को सुना ही न हो, लेकिन यदि ऐसा हुआ था तो यीशु ने जवाब नहीं दिया था। अन्य शब्दों में, यीशु ने उस व्यक्ति के विश्वास को परखा था।

यदि बरतिमाई केवल एक बार पुकारने के बाद ही हिम्मत हार जाता, तो वह चंगा न हुआ होता। हमें भी कई बार विश्वास में दृढ़ बने रहने की ज़रूरत होती है, क्योंकि कई बार ऐसा लगता है कि हमारी प्रार्थनाओं का जवाब नहीं मिलेगा। ऐसा हमारे विश्वास के परखे जाने के समय में होता है, इसलिए हमें प्रतिकूल परिस्थितियों से निराश हुए बिना लगातार खड़े रहने की ज़रूरत है।

बरतिमाई के विश्वास के अतिरिक्त संकेत

Further Indications of Bartimaeus' Faith

जब यीशु ने अन्ततः उसे अपने पास बुलाया, बाइबल बताती है कि बरतिमाई ने ''अपना कपड़ा एक ओर फेंक दिया।'' मेरे विचार से यीशु के दिनों में अन्धे लोग एक विशेष प्रकार का कपड़ा पहनते थे जिससे लोगों के बीच यह जाना जा सके कि वह अन्धा है। यदि ऐसा है तो यीशु के बुलाने पर बरतिमाई ने अपना कपड़ा

एक ओर इस विश्वास से फेंक दिया कि अब उसे अन्धे होने की पहचान रखने की ज़रूरत नहीं है। ऐसा होने पर उसका विश्वास फिर से एक प्रमाण था।

इसके अतिरिक्त, बरतिमाई के अपना कपड़ा एक ओर फेंक देने पर, बाइबल बताती है कि वह ''उछलने'' लगा। उसकी उत्तेजना इस आशा का एक प्रगटीकरण था कि कुछ अच्छा होने वाला है। विश्वास करने वाले लोग चंगाई के लिए प्रार्थना करने पर उत्तेजित होते हैं क्योंकि वे अपनी चंगाई को प्राप्त करने की अपेक्षा कर रहे होते हैं।

ध्यान दें कि जिस समय पर बरतिमाई यीशु के सामने खड़ा हुआ, उसके विश्वास को एक बार फिर से परखा गया। उसने बरतिमाई से उसकी इच्छा के बारे में पूछा और बरतिमाई के जवाब से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने यह विश्वास किया कि यीशु उसके अन्धेपन को चंगा करेगा या कर सकता है।

अंत में, यीशु ने उसे बताया कि उसके विश्वास ने उसे चंगा किया है। यदि बरतिमाई अपने विश्वास से चंगा हो सकता था, तो कोई और भी हो सकता है क्योंकि परमेश्वर ''व्यक्ति का भेद नहीं करता।''

अतिरिक्त अध्ययन के लिये

For Further Study

नीचे मैंने चारों सुसमाचारों में वर्णित यीशु द्वारा किये गए इक्कीस चंगाई के मामलों का विवरण दिया है। बेशक यीशु ने इक्कीस से अधिक लोगों को चंगा किया था, लेकिन इन सभी मामलों में हम बीमार व्यक्तियों के बारे में कुछ जानकारी जान पाते हैं और यह कि वह कैसे चंगा हुआ/हुई थी।

मैंने इस सूची को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया है-वे जो विश्वास से चंगे हुए थे तथा जो चंगाई के दान द्वारा चंगे हुए थे। मैंने ध्यान दिया कि जब असंख्य लोग अपने विश्वास से चंगे हुए थे तब यीशु ने उन्हें अपनी चंगाई के बारे में किसी को न बताने को कहा था। यह बाद में संकेत देता है कि ये ''चंगाई के वरदान'' नहीं थे। क्योंकि बीमार लोग यीशु और सुसमाचार का प्रचार करने को चंगे नहीं किये गए थे।

वे मामले जहां विश्वास या भरोसा करने का वर्णन चंगाई के कारणों के रूप में किया गया है :

Cases Where Faith or Believing is Mentioned as the Cause of Healing:

1. **सूबेदार का सेवक (या ''लड़का'')** : मत्ती 8:5-13; लूका 7:2-10 ''जैसा तेरा विश्वास है वैसा ही तेरे लिये हो।''

2. लकवाग्रस्त को छत से नीचे उतारा जाना : मत्ती 9:2-8; मर. 2:3-11; लूका 5:18-26 ''उनके विश्वास को देखकर...उसने कहा...'घर जा।'

3. याईर की बेटी : मत्ती 9:18-26; मर. 5:22-43; लूका 8:41-56 ''मत डर; केवल विश्वास रख...उसने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए।''

4. लहू बहने वाली स्त्री : मत्ती 9:20-22; मर. 5:25-34; लूका 8:43-48 ''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।''

5. दो अन्धे व्यक्ति : मत्ती 9:27-31 ''तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो...सावधान, कोई इस बात को न जाने!''

6. अन्धा बरतिमाई : मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43 ''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।''

7. दस कोढ़ी : लूका 17:12-19 ''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।''

8. राजदरबारी का पुत्र : यूहन्ना 4:46-53 ''जो वचन यीशु ने उस व्यक्ति से बोला था उसने उस पर विश्वास किया।''

अगले चार मामलों में, बीमार व्यक्ति के विश्वास का विशिष्ट रूप से वर्णन नहीं किया गया है, लेकिन इसे उसके शब्दों और कार्यों में कार्यान्वित किया गया है। उदाहरण के लिए दो अन्धे व्यक्तियों (नीचे संख्या 10 में) ने यीशु के निकट से गुज़रते हुए उसे उसी तरह से पुकारा था जैसे बरतिमाई ने पुकारा था। अगले चार उदाहरणों के सभी बीमारों ने यीशु की ओर देखा, जो कि उनके विश्वास का एक स्पष्ट संकेत है। अगले चार मामलों में से तीन में, यीशु ने एक बार चंगा होने वाले से कहा था कि जो कुछ हुआ था उसके बारे में किसी को न बताए, यह संकेत देते हुए कि ये मामले ''चंगाई के वरदान'' के नहीं थे।

9. वह कोढ़ी जो परमेश्वर की इच्छा को न जानता था : मत्ती 8:2-4; मर. 1:40-45; लूका 5:12-14 ''किसी से न कह।''

10. दो अन्धे व्यक्ति (संभवतः एक बरतिमाई था) : मत्ती 20:30-34 ''वे और भी चिल्लाकर बोले, 'हे प्रभु...हम पर दया कर।'

11. गूंगा और बहरा व्यक्ति : मरकुस 7:32-36 ''उसने उन्हें चिताया कि किसी से न कहना।''

12. एक अन्धा व्यक्ति : मरकुस 8:22-26 ''उस गांव में प्रवेश भी न करना।''

इन अन्तिम दो मामलों में जो लोग विश्वास से चंगे हुए थे, वे वास्तव में चंगे हुए नहीं थे, उन्होंने दुष्टात्माओं से छुटकारा पाया था। लेकिन उनके छुटकारे का श्रेय यीशु ने उनके विश्वास को दिया था।

13. मिर्गी की बीमारी वाला लड़का : मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:17-27; लूका 9:38-42 ''और यीशु ने उससे कहा...'विश्वास करने वाले के लिये सब कुछ संभव है।' उसी समय लड़के का पिता चिल्ला उठा...मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास को दूर कर।''

14. सुरूफिनीकी स्त्री की बेटी : मत्ती 15:22-28; मरकुस 7:25-30 ''हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है : जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो।''

''चंगाई के वरदानों'' द्वारा चंगे होने वाले लोग:

Cases of People Healed Through "Gifts of Healings":

इन अंतिम सात मामलों में वे लोग हैं जो चंगाई के वरदानों द्वारा चंगे हुए हैं। तौभी, प्रथम तीन मामलों में, बीमार व्यक्ति के चंगाई प्राप्त करने से पूर्व यीशु की ओर से आज्ञाकारिता की एक विशिष्ट आज्ञा दी गई थी। इनमें से किसी भी मामले में यीशु ने चंगे हुए लोगों को किसी को भी बताने से मना नहीं किया था।

15. सूखे हाथ वाला व्यक्ति : मत्ती 12:9-13; मरकुस 3:1-5, लूका 6:6-10 ''उठ और आगे आ...अपना हाथ बढ़ा।''

16. बैतहसदा कुण्ड का व्यक्ति : यूहन्ना 5:2-9 ''उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।''

17. जन्म से अंधा व्यक्ति : यूहन्ना 9:1-38 ''शिलोह में जाकर धो ले।''

18. पतरस की सास : मत्ती 8:14-15; मरकुस 1:30-31; लूका 4:38-39

19. 18 वर्ष से कुबड़ी स्त्री : लूका 13:11-16

20. जलन्धर के रोगी की चंगाई : लूका 14:2-4

21. महायाजक का दास : लूका 22:50-51

उपरोक्त इक्कीस उदाहरणों पर ध्यान दें, कि कोई भी व्यस्क व्यक्ति *केवल* दूसरे व्यस्क व्यक्ति के विश्वास से चंगा नहीं हुआ था। प्रत्येक मामले में जब कोई किसी दूसरे व्यक्ति के विश्वास से चंगा हुआ था, हमेशा एक बच्चा ही अपने माता-पिता के विश्वास से चंगा हुआ था (देखें उदाहरण 1,3,8,13 और 14)।

1 और 2 संख्या के उदाहरण ही संभावित रूप से अपवादस्वरूप होंगे-अधिकारी का दास; और लकवाग्रस्त को छत से नीचे उतारा जाना। अधिकारी के सेवक के मामले में, अनुवादित शब्द *सेवक* यूनानी का *पायस शब्द* है, जिसका मत्ती 17:18 के अनुसार *लड़का* भी अनुवाद किया जा सकता है : ''और *लड़का* उसी घड़ी अच्छा हो गया'' (पर बल दिया गया है)।

यदि वह वास्तव में अधिकारी का दास था न कि उसका पुत्र, उसका दास अवश्य ही एक युवा लड़का रहा होगा, इसलिए वह अधिकारी अथवा सूबेदार उसके संरक्षक के रूप में उसके प्रति उत्तरदायी था और उसकी ओर से उसी विश्वास को प्रगट कर रहा था जैसे एक माता-पिता अपने बच्चे के लिए करते हैं।

लकवे के रोगी को छत से नीचे उतारने के मामले में, इस पर भी ध्यान दें कि लकवे के रोगी में स्वयं भी विश्वास रहा होगा, अन्यथा वह अपने मित्रों को कभी

स्वयं को छत से नीचे उतारने की अनुमति नहीं देता। अत: वह *केवल* अपने मित्रों के विश्वास से ही चंगा नहीं हुआ था।

यह सब संकेत करता है कि यह बहुत अजीब लगता है कि एक व्यस्क व्यक्ति के विश्वास से दूसरा बीमार व्यस्क व्यक्ति जिसे विश्वास न हो चंगा होता है। हां एक व्यस्क व्यक्ति उस दूसरे व्यक्ति के साथ सहमति की प्रार्थना कर सकता है जिसे चंगाई की आवश्यकता हो लेकिन बीमार व्यक्ति का अविश्वास दूसरे व्यक्ति के विश्वास को प्रभावहीन कर सकता है।

तौभी, हमारे अपने बच्चे हमारे विश्वास के द्वारा चंगे हो सकते हैं, लेकिन एक निर्धारित आयु सीमा तक। तौभी, वे एक ऐसी आयु में पहुंचेंगे जिसमें परमेश्वर उनसे यह अपेक्षा करेगा कि उनका विश्वास का आधार उनका स्वयं का हो।

उपरोक्त दिये गए प्रत्येक उदाहरण को अपनी बाइबल में पढ़ने हेतु मैं आपको प्रोत्साहित करता हूं जिससे आपका विश्वास हमारे प्रभु के चंगाई देने वाले प्रावधान पर दृढ़ हो।

अभिषिक्त चंगाई

The Healing Anointing

अन्त में यह जानना महत्वपूर्ण है कि यीशु को अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के समय में स्पृश्य चंगाई की सामर्थ से अभिषिक्त किया गया था। अर्थात् वह अपने में से चंगाई की सामर्थ को निकलते हुए अनुभव कर सकता था और कुछ मामलों में चंगाई प्राप्त करने वाला अपने भीतर चंगाई की सामर्थ को प्रवेश करते हुए अनुभव कर सकता था। उदाहरण के लिए लूका 6:19 कहता है, ''और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ निकलकर सब को चंगा करती थी।''

इसके अतिरिक्त, चंगाई का अभिषेक यीशु के वस्त्रों में भी इतना भरा होता था कि एक बीमार व्यक्ति के उसके वस्त्रों को छू लेने पर चंगाई का अभिषेक उसकी देह में भी प्रवेश कर जाता था। मरकुस 6:56 में हम पढ़ते हैं :

और जहां कहीं वह गांवों, नगरों या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाज़ारों में रखकर उससे विनती करते थे, कि वह उन्हें वस्त्र के आंचल ही को छू लेने दे : और जितने उसे छूते थे सब चंगे हो जाते थे।

लहू बहने वाली स्त्री (देखें मरकुस 5:25-34) केवल यीशु के वस्त्र के सिरे को छूते ही चंगी हो गई थी, क्योंकि वह विश्वास से चंगे होने ही आशा कर रही थी।

न केवल यीशु को एक स्पृश्य चंगाई अभिषेक से अभिषिक्त किया गया था बल्कि ऐसा ही उसकी सेवकाई के वर्षों बाद पतरस की सेवकाई में भी हुआ था :

परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था। यहां तक कि रूमाल और अंगोछे उसकी देह से छुलवाकर बीमारों पर डालते थे, और उन की बीमारियां जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएं उन में से निकल जाया करती थीं (प्रेरित. 19:11-12)।

स्पृश्य चंगाई का अभिषेक पौलुस की देह से जुड़े किसी भी वस्त्र में भरा रहता था, जो प्रमाणिक रूप से यह संकेत देता है कि वस्त्र चंगाई की सामर्थ का एक अच्छा संचालक हैं!

परमेश्वर, यीशु और पौलुस के दिनों से बदला नहीं है, इसलिए यदि आज प्रभु अपने कुछ सेवकों को इस तरह के चंगाई के अभिषेक से अभिषिक्त करता है तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए, उसने ऐसा यीशु और पौलुस के साथ भी किया था। तथापि, ये दान नौसिखियों को नहीं दिये गए हैं, परन्तु केवल उन्हीं को दिये गए हैं जिन्होंने एक लम्बे समय से स्वयं को विश्वासयोग्य और नि:स्वार्थी प्रमाणित किया है।